Important Topic

66th BPSC Preliminary Examination-2020

TOPIC:

बिहार में धर्म एवं दर्शन

BIHAR SAMANYA VIVARNIKA
From TheBook

बिहार में धर्म

बिहार में धर्म का आरंभिक प्रमाण ई.पू. छठी शताब्दी में देखने को मिलता है जब मध्य एव निम्न गंगा के मैदानों में 62 धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। बिहार की गौरवशाली धरा ने जैन और बौद्ध दो महान धार्मिक परम्पराओं को जन्म दिया, जिसने सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा, क्षमा, धृति (धैर्य), विद्या, सत्य, अक्रोध, साम्य, मैत्री, प्रेम सेवा, सहिष्णुता आदि का संदेश संप्रेषित किया।

विभिन्न संस्कृतियों के समागम स्थल बिहार में प्राचीन काल से ही वैदिक और अवैदिक धार्मिक रीति-रिवाजों का प्रवाह एक साथ शान्तिपूर्वक होता रहा। लम्बी यात्रा तय करके इन रीति-रिवाजों ने वर्तमान में धर्म का रूप धारण कर लिया है। वर्तमान समय में बिहार की अधिकांश जनसंख्या हिन्दुओं का है। इसके बाद मुस्लिमों की आबादी अधिक है। इनके अतिरिक्त शेष लगभग 10% आबादी में ईसाई, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि धर्मावलम्बी आते है। बिहार के कुछ हिस्सों में आदिवासी भी निवास करते है जो परम्परागत जनजातीय धर्म को माननेवाले है। राज्य में लगभग इन सभी धर्मों का पवित्र तीर्थस्थान मौजूद है।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

बिहार में धार्मिक जनसंख्या

हिन्दू	–	82.69%
मुस्लिम	–	16.87%
क्रिश्चन	–	0.12%
सिक्ख	–	0.02%
बौद्ध	–	0.02%
जैन	–	0.02%
अन्य धर्म	–	0.01%
कोई धर्म न मानने वाले	–	0.24%

स्रोत: *भारत की जनसंख्या 2011*

बौद्ध धर्म: बौद्ध धर्म के मुख्य प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे। इनका जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु (पिपरहवा नेपाल की तराई) के निकट लुम्बिनी (रूमिन्नदेई) में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्य गणराज्य के प्रधान और माता महामाया देवी कोशल राजवंश की राजकुमारी थी। माता की मृत्यु के पश्चात् उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने गौतम बुद्ध का लालन-पालन किया। राजकुमार सिद्धार्थ का रूझान बचपन से ही आध्यात्म की तरफ था। इसलिए उनको सांसारिक सुखों की ओर आकृष्ट करने के लिए उनका विवाह कोलियगण की कन्या राजकुमारी यशोधरा से करवा दिया गया। यशोधरा से जन्में उनके पुत्र का नाम राहुल था। पुत्र जन्म के कुछ समय पश्चात् ही 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग दिया। बौद्ध साहित्य में बुद्ध के गृहत्याग को महाभिनिष्क्रमण कहा गया है। उन्होंने जीवन से संबंधित चार दृश्यों एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी, एक मृत व्यक्ति के शव तथा एक सन्यासी को देखने के बाद सांसारिक जीवन का त्याग कर सन्यास का मार्ग अपना लिया।

महात्मा बुद्ध ने बिहार को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। महाभिनिष्क्रमण के बाद उन्होंने वैशाली के आलार-कलाम और राजगृह के उदात्त रामपुत्र से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया परन्तु ज्ञान के भूखे बुद्ध की जिज्ञासा शान्त नहीं हुई। गया के निकट उरूबेला (स्थान का नाम) की वनस्थली में पाँच सन्यासियों के साथ कठोर तपस्या करने के बाद भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। तब उन्होंने तप का मार्ग त्याग दिया और निरंजना नदी को पार कर पीपल वृक्ष के नीचे चिन्तन मनन किया और यहीं ध्यान लगाकर बैठ गये। आठवें दिन 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात्रि को उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई (इस घटना को बौद्ध साहित्य में सम्बोधि के नाम से जाना जाता है)। तब से वे बुद्ध अर्थात् प्रज्ञावान कहलाने लगे तथा जिस पीपल वृक्ष के नीचे इन्हें बुद्धत्व अर्थात् सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई, उसे बोधिवृक्ष कहा जाने लगा और यह स्थान बोधगया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन ऋषिपतन (सारनाथ) में पाँच ब्राह्मणों (भद्दीय, वप्प, ऑज, अस्साणि और कौण्डिय) को दिया जिसे धर्मचक्रप्रर्वतन कहा गया। उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के बाद 40 वर्षों तक सारनाथ, मगध और वैशाली में अपने धर्म का प्रचार किया। गौतम बुद्ध 80 वर्ष की अवस्था में चुन्द नामक एक कर्मकार के हाथों सूकर खाने के बाद कुशीनगर में स्वर्गवासी हुए। इस घटना को महापरिनिर्वाण कहा गया।

चार आर्य सत्य दु:ख, दु:ख समुदाय, दु:ख निरोध और दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा, बुद्ध द्वारा अपने अनुयायियों को दिए गए आचार नियम है। चार आर्य सत्य को बौद्ध धर्म का मूल आधार कहा गया है। गौतम बुद्ध ने दु:खों पर विजय पाने का रास्ता भी दिखलाया जिन्हें अष्टांगिक मार्ग कहा गया है। ये आठ

BY NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

साधन है–सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक् सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि। बुद्ध द्वारा बतलाये गये मार्ग को अपनाने के लिए न तो पुरोहितों की आवश्यकता थी और न ही धार्मिक कर्मकाण्डों की, वरन् मात्र नैतिक आचरण के शुद्धि की आवश्यकता थी। उन्होंने नैतिक आचरण को शुरू करने के लिए दस शीलों के पालन को अनिवार्य बतलाया। ये दस शील थे–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, नृत्य गान का त्याग, श्रृंगार प्रसाधनों का त्याग, समय पर भोजन, कोमल शय्या का त्याग और कामिनी कंचन का त्याग। इनमें से प्रथम पांच शील सभी के लिए थे और शेष पांच केवल भिक्षुको के लिए अनिवार्य थे। बुद्ध ने दान देने, बड़ों की आज्ञा का पालन करने और सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का भी आदेश दिया। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों की भर्त्सना की और ऊँच–नीच छुआछुत, अंधविश्वास आदि को समाप्त करने पर बल दिया। वास्तव में उन्होंने जातीय बंधन को तोड़कर सामाजिक समानता की स्थापना करने का संदेश दिया। जैन धर्म की तुलना में उनका धर्म सरल के साथ–साथ व्यवहारिक भी था, इसलिए आमजन में बौद्ध धर्म अधिक लोकप्रिय हुआ।

महात्मा बुद्ध के अनुयायियों ने उनके महापरिनिर्वाण के बाद भी बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया। महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म कई सम्प्रदायों में बँट गया। इनमें सामंजस्य बिठाने के लिए चार बौद्ध संगीतियाँ आयोजित की गई–

संगीति	स्थान	समय	अध्यक्ष	शासनकाल
प्रथम बौद्ध संगीति	राजगृह	483 ई.पूर्व	महाकस्सप	अजातशत्रु
द्वितीय बौद्ध संगीति	वैशाली	383 ई.पू.	साबकमीर	कालाशोक
तृतीय बौद्ध संगीति	पाटलिपुत्र	251 ई.पू.	मोग्गलिपुत्ततिस्य	अशोक
चतुर्थ बौद्ध संगीति	कुण्डलवन	ई. की प्रथम सदी	वसुमित्र	कनिष्क

इसके साथ ही समकालीन कई शासकों ने भी बौद्ध धर्म को संरक्षण एवं प्रश्रय दिया। मौर्य शासक अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा था। ईसा की आरम्भिक सदी में बौद्ध धर्म का विकास मध्य एशियाई देशों तक हो गया। इसके बाद यह धर्म बंगाल–बिहार में प्रभावशाली बना रहा। किन्तु तुर्क आक्रमण के समय भारत में इस धर्म का महत्व धीरे–धीरे कम होने लगा लेकिन दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों में बौद्ध धर्म ने अपने प्रभाव को बनाए रखा।

बौद्ध धर्म ने भारतीय साहित्य, कला, दर्शन और धर्म पर अपने प्रभाव की अमिट छाप छोड़ी। धार्मिक क्षेत्र में इसने पुरोहितों और वेदों के एकाधिकार को समाप्त कर निर्वाण प्राप्ति के लिए मध्यममार्ग एवं सदाचारपूर्ण जीवन अपनाने की सलाह दी। अहिंसा को प्रोत्साहित कर इसने पशु वध को बन्द कर दिया और इस तरह नयी कृषि प्रणाली को विकसित कर नगरीय जीवन के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इसने जाति प्रथा का कड़ा विरोध किया और ऊँच–नीच का भेद किये बिना सभी व्यक्तियों को समान धरातल पर लाने का प्रयास किया। इस तरह बौद्ध धर्म ने समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बौद्ध दार्शनिकों के स्वतन्त्र चिन्तन धारा ने दर्शन के क्षेत्र में शून्यवाद, विज्ञानवाद, मायावाद आदि नवीन मतों को जन्म दिया। नालंदा, विक्रमशिला आदि बौद्ध धर्म और दर्शन के विश्वविख्यात शिक्षा केन्द्र बनकर उभरे। इस धर्म ने जनसाधारण की भाषा पाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसने शिल्प मूर्तिकला, स्थापत्य और चित्रकला के विकास को विशेष रूप से प्रभावित किया। भगवान बुद्ध की अनेकों मूर्तियाँ गांधार तथा मथुरा शैली में बनायी गयी। पत्थरों को काटकर उनमें गुफाओं का निर्माण किया गया। गुफाओं की भित्तियों पर आकर्षक चित्र बनाये गये जिसके

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

From the Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

सर्वोत्तम उदाहरण अजन्ता और एलोरा की गुफाओं में दिखाई पड़ती है। चैत्य, स्तूप और विहार के निर्माण से कला की एक नयी रचनात्मक शैली विकसित हुई। बौद्ध धर्म ने पड़ोसी राज्यों के साथ सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेष तथ्य

- प्रथम बौद्ध संगीति में विनयपिटक (बौद्ध धर्म के नियमों का वर्णन) एवं सुत्तपिटक (धार्मिक विचारों एवं वचनों का संग्रह) क्रमशः उपालि और आनंद के नेतृत्व में लिखे गए।
- द्वितीय बौद्ध संगीति में कुछ भिक्षुओं ने संघ से अलग होकर महासंघिक नामक संप्रदाय बनाया।
- तृतीय बौद्ध संगीति में मोगलिपुत्ततिस्य ने अभिधम्मपिटक (बौद्ध दर्शन का वर्णन) का संकलन किया।
- चतुर्थ बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म हीनयान (महात्मा बुद्ध के दर्शन तथा सिद्धान्तों में विश्वास करने वाला सम्प्रदाय) एवं महायान (बुद्ध के साथ बोधिसत्वों के जीवन तथा सिद्धान्तों में विश्वास करने वाला सम्प्रदाय) संप्रदाय में बंट गया।
- बुद्ध, धम्म एवं संघ बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है।
- बौद्ध धर्म ईश्वर और आत्मा को नहीं मानता है।
- बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश कोशल प्रदेश की राजधानी श्रावस्ती में दिए।
- बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाएं एवं उनके प्रतीकः

प्रतीक		**घटना**
हाथी	–	माता के गर्भ में आना
कमल, सांड	–	बुद्ध का जन्म
घोड़ा	–	गृहत्याग
बोधिवृक्ष	–	ज्ञान प्राप्ति
धर्मचक्र	–	प्रथम उपदेश
भूमिस्पर्श	–	इन्द्रियों पर विजय
स्तूप	–	मृत्यु
पदचिन्ह	–	निर्वाण
एक करवट सोना	–	महापरिनिर्वाण

- महात्मा बुद्ध से जुड़े आठ स्थान लुम्बिनी, गया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती संकास्य, राजगृह तथा वैशाली को बौद्ध ग्रन्थों में अष्टमहास्थान कहा गया है।
- बुद्ध के घोड़े का नाम कंथक तथा सारथी का नाम छन्न था।
- बौद्ध संघ में भिक्षुओं के प्रवेश को उपसंपदा कहा जाता है।
- 16 महाजनपदों का वर्णन अंगुत्तरनिकाय में किया गया है।
- मिलिंदपन्हों (मिलिंद के प्रश्न) में बौद्ध भिक्षुक नागसेन एवं यूनानी राजा मिनान्डर (मिलिंद) का दार्शनिक वार्तालाप है।
- जातक में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाओं का वर्णन है।
- बंगाल के शैव शासक शशांक ने गया स्थित बोधिवृक्ष को कटवा दिया था।

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

➢ बिम्बिसार, प्रसेनजित, अजातशत्रु, जीवक, अनाथपिण्डक, क्षेमा, आम्रपाली, आदि समकालीन बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

➢ दीपवंश तथा महावंश अन्य महत्वपूर्ण रचनाएं हैं जिसमें बौद्ध दर्शन तथा बौद्ध धार्मिक सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है।

जैन धर्मः बिहार में जन्मा जैन संप्रदाय धार्मिक सुधार के परम शक्तिशाली आंदोलन के रूप में उभरा। यह एक प्रतिक्रियावादी धर्म है। जैन धार्मिक विचार के अनुसार ऋषभदेव से महावीर तक जैन धर्म के 24 तीर्थंकर हुए (तीर्थकर का तात्पर्य है- जो व्यक्ति अन्य लोगों को सत्मार्ग दिखाए)। इन 24 तीर्थंकरों में 12 वें तीर्थंकर वसुपूज्य, 19वें तीर्थंकर मल्लिकनाथ, 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ, 21 वें तीर्थंकर नेमिनाथ और 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म बिहार में हुआ था। महावीर जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह कुल चार सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था। 24वें तीर्थंकर महावीर ने अपनी ओर से ब्रह्मचर्य को इसमे जोड़ दिया। यही (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) जैन धर्म के पाँच आधारभूत सिद्धान्त हैं।

भगवान महावीर के जीवन के सम्बन्ध में विभिन्न ग्रंथों से जानकारी मिलती है। इनका जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के समीप कुण्डग्राम में ज्ञातृक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला था। त्रिशला लिच्छवि नरेश चेटक की बहन थी। महावीर का विवाह यशोदा नामक एक राजकुमारी से हुआ था जिससे उन्हें एक पुत्री प्रियदर्शना (अणोज्जा) की प्राप्ति हुई। अपने परिवारजनों की सहमति तथा अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर महावीर ने 30 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का परित्याग कर दिया और 12 वर्षो तक कठोर तपस्या की। 13वें वर्ष में ऋजुपालिका नदी के तट पर जृम्भिक ग्राम में उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई। तपस्या से समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे 'जिन' कहलाये। महावीर को जिन, अर्हत, निर्ग्रन्थ, केवलिन तथा नाथपुत्र के नाम से भी जाना जाता है। कैवल्य प्राप्ति के बाद इन्होंने अपना प्रथम उपदेश राजगृह में दिया। इनका निधन 72 वर्ष की आयु में 468 ई.पू. में पावापुरी (राजगीर के निकट) में मल्ल शासक सुस्तपाल के राज्य में हुआ।

भगवान महावीर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते थे। उनका मानना था कि भय और लोभ का परित्यागर कर ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। वे कर्म की महत्ता तथा पुर्नजन्म को भी स्वीकार करते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य अपने कर्मो के कारण ही बार-बार जन्म लेता है और बार-बार उसकी मृत्यु होती है। उनके अनुसार पूर्व जन्म में अर्जित पुण्य या पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च या निम्न कुल में होता है। जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने के लिए उनका कहना था कि मनुष्य सदाचरण द्वारा अपने कर्म को सहज और सरल बनाकर निर्वाण प्राप्त कर सकता है। निर्वाण प्राप्ति के लिए उन्होंने त्रिरत्नों के पालन पर जोर दिया। ये त्रिरत्न है-सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक कर्म। सम्यक दर्शन का अर्थ है कि सभी प्राणी स्वयं को जीवधारियों के समान समझें और तीर्थकरों के अस्तित्व पर विश्वास रखें। सम्यक् ज्ञान का अर्थ है- सच्चा और पूर्ण ज्ञान जो तीर्थकरों के उपदेशों के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। सम्यक कर्म का अर्थ, मनुष्य अपने कर्म को नियंत्रित करके चरित्र का निर्माण करे। इसके साथ ही उन्होंने मनुष्य के लिए सभी प्राणियों के साथ अहिंसात्मक बर्ताव करने को अनिवार्य बतलाया। महावीर ने वैदिक कर्मकाण्डों, यज्ञ में पशुओं की बलि देने की प्रथा और ब्राह्मणों के महत्व को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने सामाजिक विषमता ऊँच-नीच की भावना और जातिप्रथा की कटु

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

आलोचना की। तत्कालीन समय में महावीर के ये विचार निश्चय ही क्रान्तिकारी मत थे।

महावीर ने अपनी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए जैन संघ का गठन किया। उन्होंने समस्त अनुयायियों को 11 गणों में विभक्त किया तथा प्रत्येक गण में एक प्रधान (गणधर) नियुक्त कर उसे धर्म प्रचार का उत्तरादायित्व सौंपा। महावीर स्वयं इन गणधरों/प्रधान के साथ घूम-घूमकर जैन दर्शन का प्रचार करते थे। उन्होंने स्वयं अंग, मगध और मिथिला में भ्रमण कर जैन धर्म को जनप्रिय बनाया। जैन संघ के सदस्यों को चार वर्गों में विभाजित किया गया। ये है-भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक एवं श्राविका भिक्षु और भिक्षुणी सन्यासी जीवन व्यतीत करते थे जबकि श्रावक एवं श्राविका को गृहस्थ जीवन व्यतीत करने की स्वीकृति थी। महावीर के निर्वाण के बाद जैन धर्म स्वयं को ब्राह्मण धर्म से अलग नहीं रख सका जिसके कारण जैन धर्म साधारण लोगों की पहुँच से दूर होता चला गया। भारत में इसे बौठ धर्म की भांति शासक वर्ग का समर्थन न मिल सका। भारत के बाहर विदेशों में भी इस धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार भी नहीं हुआ। इसलिए यह धर्म केवल भारत की परिधि में ही सिमट कर रह गया।

जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन (रचनाकार-हेमचन्द्र) के अनुसार मगध में 12 वर्षो तक लंबा अकाल पड़ा। अतः बहुत से जैन भ्रदबाहु के नेतृत्व में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) चले गए। शेष जैन स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध में ही रूक गए। अकाल समाप्त होने पर जब भद्रबाहु व उनके समर्थक मगध लौटे तो स्थानीय लोगों से उनका मतभेद हो गया। उन्होंने पाया कि स्थानीय लोगों (स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध में रह रहे जैन लोग) ने जैन धर्म का पालन नही किया है। इस मतभेद को दूर करने के लिए पाटलिपुत्र में एक परिषद का आयोजन किया गया जहाँ जैन धर्म दो सम्प्रदायों दिगम्बर (भद्रबाहु के समर्थक) और श्वेताम्बर (स्थूलमद्र के समर्थक) में विभक्त हो गया। दिगम्बरों ने महावीर के मूल शिक्षाओं का अक्षरशः पालन किया। ये बिना वस्त्र धारण किए अपना जीवन व्यतीत करते थे। श्वेताम्बर श्वेत वस्त्र धारण करते थे। जैन धर्म में विभिन्न मतों के प्रचलित हो जाने से यह सीमित वर्ग में ही लोकप्रिय हुआ और केवल व्यापारी वर्ग में ही इसकी लोकप्रियता बनी रही। ई.पू. 300 के आसपास स्थूलभद्र की अध्यक्षता में प्रथम जैन संगीति (शासक-चन्द्रगुप्त मौर्य) का आयोजन हुआ जिसमें जैन धर्म की शिक्षाओं का संकलन 12 अंगों में किया गया।

जैन धर्म ने भारतीय समाज और धर्म के स्वरूप को बहुत प्रभावित किया। इसने पहली बार संगठित और सशक्त रूप से वैदिक धर्म के समक्ष एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत की। इसने पारम्परिक वर्ण व्यवस्था पर प्रहार कर कर्मवाद के आधार पर सामाजिक संरचना पर बल दिया। जैन धर्मावलम्बियों ने संस्कृत भाषा को छोड़कर बोलचाल की प्राकृत भाषा को अपने साहित्य में स्थान दिया। गुजरात के बल्लभी में देवाधिधर्मिणी या क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुए द्वितीय जैन संगीति में जैन धर्म के मूल ग्रन्थों को अंतिम रूप से प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध किया गया। प्राकृत भाषा के कारण ही अनेक क्षेत्रीय भाषाओं विशेषकर सौरसेनी और मराठी भाषा का उद्भव हुआ। जैन विद्वानों ने न केवल धर्म एवं दर्शन के ग्रन्थों का सृजन किया वरन् व्याकरण, काव्य, नाटक, पुराण, कोश, नीति आदि से संबंधित ग्रंथों की रचना कर भारतीय साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जैन धर्मावलम्बियों ने बौद्धों के समान गुफाओं का निर्माण करवाया। अनेक मंदिरों, पाषाण स्तम्भों और मूर्तियों का भी निर्माण जैन अनुयायियों द्वारा करवाया गया था। बादामी पहाड़ी, मेंगुटी पहाड़ी (ऐहोल), ऐलोरा, श्रवणबेलगोला आदि स्थानों पर उपलब्ध आदिनाथ, पार्श्वनाथ शान्तिनाथ आदि की मूर्तियाँ जैन वास्तुकला एवं मूर्तिकला की कलात्मक शैली का जीवंत उदाहरण है। बिहार में राजगीर की वैभार पहाड़ी और उदयगिरी पहाड़ी में सुरक्षित कुछ

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

जैन मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय है जिनमें से कुछ के पादपीठ पर कमल के चित्र का अंकित है।

विशेष तथ्यः

- जैन ग्रन्थ कल्पसूत्र तथा आचरांगसूत्र में महावीर की कठोर तपस्या तथा ज्ञान प्राप्ति की चर्चा मिलती है।
- राजा उदायिन, चन्द्रगुप्त मौर्य, कलिंग नरेश खारवेल, राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष, गंग नरेश, गुजरात के सोलंकी शासक, चण्डप्रद्योत, दधिवाहन आदि शासक जैन धर्म को मानते थे।
- जैन तीर्थकरों का जीवनचरित कल्पसूत्र में वर्णित है जिसकी रचना भ्रदबाहु ने की थी।
- जैन मठों को बसादि (बसदिस) कहा जाता है।
- जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है। इसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंद सूत्र तथा 4 मूल सूत्र होते है।
- जैन धर्म के ग्रन्थ अर्द्धमागधी भाषा में लिखे गए है।
- निराहार एवं निर्जल रहकर प्राण त्याग करना सल्लेखना कहा जाता है। यह पद्धति जैन धर्म में प्रचलित है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसी पद्धति से अपने प्राण त्यागे थे।
- जैन धर्मानुसार सात आंशिक ज्ञान होते है जिन्हें स्यादवाद कहा जाता है। इसे अनेकांतवाद और सप्तभंगी भी कहा जाता है
- चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर की पहली महिला भिक्षुणी थी।
- मैसूर के गंग वंश के मंत्री ने गोमतेश्वर में महावीर की विशाल मूर्ति का निर्माण करवाया।
- जैन दर्शन वैदिक सांख्य दर्शन (हिन्दू सांख्य दर्शन) के काफी निकट है।

इस्लाम धर्म एवं बिहार की विभिन्न सूफी परंपरायें: बिहार में इस्लाम धर्म का प्रवेश तुर्क सत्ता की स्थापना के पूर्व सूफियों के प्रवेश के साथ होता है। बिहार की भूमि को लगभग सभी सूफी सम्प्रदायों –चिश्ती, कादिरी, सुहरावर्दी, मदारी, फिरदौसी, नक्शबंदी आदिन ने स्पर्श किया। फिरदौसी सिलसिला को बिहार में सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। यद्यपि सूफी परंपरा का जन्म भारत की सीमा से बाहर हुआ था परंतु इस सम्प्रदाय ने भारत विशेषकर बिहार में गहरी छाप छोड़ी थी। बिहार में सबसे पहले चिश्ती और सुहरावर्दी सम्प्रदाय के लोगों ने 12 वीं शताब्दी में प्रवेश किया और बिहार के लोगों पर विशेष प्रभाव डाला।

☞ **बिहार में चिश्ती सिलसिला:** भारत में चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक सैयद हुसैन खिरसबार के तीन सम्बन्धियों ने बिहार में घूम-घूम कर अपने मत का प्रचार-प्रसार किया। बिहार में भी इस सिलसिले के अनेको प्रसिद्ध संत हुए जिनमें हजरत आदम सूफी रहमतुल्लाह अलैह (मजार-पटना स्थित ज्योठली में पक्की दरगाह), हजरत फरीदउद्दीन तबीला बख्श, हजरत जमाल उल हक बंदगी मुस्तफा (चिमनी बाजार पूर्णिया) प्रमुख है। बिहार शरीफ के सुफी संत शेख खिज्र पारादोज विख्यात चिश्ती सूफी हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद थे। इन संतों के प्रभाव से बिहार में चिश्ती सिलसिला के लाखों अनुयायी बन गए। बिहार शरीफ की प्रसिद्ध खानकाहों में हजरत सैयद फजलुल्लाह गोसाई और उनके बेटे मीर सैयद महमूद बिहारी और पौत्र सैयद नसीरउद्दीन बिहारी भी उच्च कोटि के संत हुए। सैयद निजामुद्दीन (सैयद नसीरउद्दीन बिहारी के पौत्र) द्वारा स्वहस्तलिखित पुस्तक खानकाह मुनएमिया, मीतन घाट, पटना के ग्रंथालय में आज भी सुरक्षित है जिसमें चिश्ती सिलसिला के विचारों का संग्रह है। समकालीन समय में बिहार शरीफ, जहानाबाद, अरवल, नवादा, बाढ़, सारण, वैशाली, छपरा, गया, आदि स्थान बिहार में चिश्ती सम्प्रदाय का महान केन्द्र था जहाँ अनेको चिश्ती संतों की मजार आज भी मौजूद है। बड़ी संख्या में लोग आज भी इन मजारों पर चादर चढ़ाने आते हैं।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
From The Book BIHAR SAMANYA VIVAPNIKA

☞ **बिहार में सुहरावर्दी सिलसिला:** सिहाबुद्दीन पीर जगजोत बिहार में सबसे प्रमुख सुहरावर्दी संत थे जिनकी दरगाह पटना शहर की दक्षिणी सीमा पर स्थित है और कच्ची दरगाह के नाम से विख्यात है। इन्होंने इस सम्प्रदाय को बिहार में नई ऊंचाई पर पहुँचाया। उनकी चारों बेटियों ने भी उनका भरपूर सहयोग दिया। उन्होंने बिहार और बंगाल के ऐसे सपूतों को जन्म दिया जो सबके सब आश्चर्यजनक रूप में ज्ञान व अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रणी रहे। शेख शर्फुद्दीन याह्या मनेरी, हजरत मखदूम अहमद चर्मपोश, मखदूम तय्यमुल्लाह सफेदबाज, मखदूम हुसैन धड़कपोश सभी पीर जगजोत के सगे नाती थे और सभी विलक्षण प्रतिभा के धनी भी थे। इनकी एक बेटी बीबी कमाल ने जहानाबाद जिले के काको ग्राम में सुहरावर्दी सिलसिले के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी संभाली।

☞ **बिहार में कादरिया सिलसिला:** यह सिलसिला अपने विकास के क्रम में मदीना, ईरान, अफगानिस्तान से होता हुआ भारत पहुँचा और यहाँ पहुँचकर विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। 9वीं और 10वीं हिजरी शताब्दी में बिहार में गया के निकट अमझर शरीफ में कादरिया सिलसिले की एक सम्मानित खानकाह स्थापित हुई जिसके संस्थापक हजरत गौसे आजम शेख अब्दुल कादिर जीलानी के वंशज हजरत मख्दूय शाह मुहम्मद कादरी थे। ये बिहार में इस सिलसिला के सबसे प्रभावी एवं प्रतिष्ठित सन्त थे। इन्होंने पटना सिटी के मिलनघाट मुहल्ले में मीर तफी मस्जिद का निर्माण करवाया था। बाढ़ में एक प्रसिद्ध कादरी संत हुए जिनका नाम हजरत दीवान अबूसईद जाफ़र मुहम्मद कादरी था। वे उच्च कोटि के संत होने के साथ-साथ अरबी-फारसी भाषा व साहित्य तथा इस्लामी विधाओं के बहुत बड़े ज्ञाता थे। नालन्दा जिले के इस्लामपुर में एक कादरिया खानकाह आज भी मौजूद है जहाँ कादरिया सिलसिले की दीक्षा आज भी दी जाती है। इस सिलसिले की खानकाहें टीटागढ़, बंगाल और मुजफ्फरपुर के निकट कॉटी में आज भी कार्यरत है।

☞ **बिहार में नक्शबन्दी सिलसिला:** नक्शबन्दी शाखा के मुजाहादिया उपशाखा ने भी बिहार में इस सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया। इस सम्प्रदाय के लोग अपने साथ हाथ में छड़ी रखना पसंद करते हैं और सिर के बाल बिखरे हुए रखते हैं। भारत में इस सम्प्रदाय का प्रसार ख्वाजा बाकी बिल्लाह के द्वारा बादशाह अकबर के काल में ज्यादा हुआ। 11वीं सदी हिजरी में इमामुल हिन्द हजरत शाह वली उल्लाह मोहद्दीस देहलवी ने भी इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सम्प्रदाय के माननेवाले संगीत एवं नाच-गान को इस्लाम धर्म के विरुद्ध मानते है। बादशाह अथवा पीर के सामने साष्टांग प्रणाम को भी इस सम्प्रदाय ने अनुचित बतलाया तथा संतों और उनकी मजार पर दीप जलाने तथा उनकी पूजा आदि को, इस्लाम धर्म के प्रतिकूल कहते हुए, इसे प्रतिबंधित किया। तमाम प्रतिबंध होने के कारण ही बिहार में इस सम्प्रदाय के बहुत कम अनुयायी है।

☞ **बिहार में फिरदौसी सिलसिला:** मध्यकालीन बिहार के सांस्कृतिक इतिहास में फिरदौसी सूफी संतों का महत्वपूर्ण योगदान है। बिहार में इस सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि हज़रत मख्दूम जहाँ शेख शर्फुद्दीत याह्या मनेरी थे जिन्होंने अपने ईश-ज्ञान व अध्यात्म के आधार पर इस्लाम धर्म की सेवा की तथा सत्यनिष्ठा, शिष्टाचार, प्रेमभाव और भ्रातृत्व की भावना जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया और मानव सेवा को सूफियों का सबसे बड़ा कर्तव्य समझा। 10वीं सदी हिजरी में मनेर शरीफ के हज़रत मख्दूम शाह दौलत के प्रयासों से फिरदौसिया सिलसिला को इतनी प्रसिद्धि मिली कि अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में मुगलिया शासन के कई गवर्नर व विशिष्ट अधिकरी इस सिसिला के सिद्धांत को स्वीकार

BY NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

कर साधक हुए। वर्तमान नालन्दा जिला का बिहार शरीफ सब-डिविजन जो कभी बौद्ध विहारों के कारण बिहार कहलाने लगा था, हज़रत मख्दूम के जीवन में सूफियों की खानकाहों, चिल्लों और तकियों के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्धि प्राप्त कर लिया। बिहार शरीफ में हज़रत मख्दूम जहाँ शर्फुद्दीन याह्या मनेरी (स्वर्गवास 782 हिज़री या 1381 ई.) के प्रवास ने सम्पूर्ण इस्लामी जगत के नक्शें पर बिहारशरीफ को केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया। सिकन्दर लोदी, शेरशाह, सुलेमान किरानी, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब, शाह आलम द्वितीय जैसे प्रसिद्ध शासकों ने व्यक्तिगत रुप से बिहार शरीफ के मनेरी मज़ार पर चादर चढ़ाया था। यह बिहार में सर्वाधिक प्रसिद्ध/लोकप्रिय सिलसिला रहा।

☞ **बिहार में सत्तारी सिलसिला:** हज़रत शेख अब्दुल्लाह सत्तार बिन हुसामुद्दीन अलनूरी अल बुखारी को इस सिलसिला का प्रवर्तक माना जाता है। हाजीपरु के निकट जन्दाहा, बिहार शरीफ, भागलपुर, राजगीर (मिल्की मुहल्ला), बेगूसराय का बलिया, मुजफ्फरपुर के रोहुआ, पटना सिटी तथा समस्तीपुर का ताजपुर इस सिलसिला का प्रधान केन्द्र है। शेख अब्दुल्लाह सत्तारी को इस सिलसिला का संस्थापक माना जाता है।

इसके अलावे बिहार में जुनैदी और मदरिया सम्प्रदाय के सूफी संत भी सक्रिय थे। सभी सम्प्रदायों सिलसिलों की लगभग समान विशेषता थी। सभी संतों ने सामाजिक जीवन में सम्मिश्रण की प्रक्रिया को बल प्रदान किया। इन्होंने धर्मान्धिता, ऊँच-नीच का विरोध करते हुए धार्मिक एवं सामाजिक सद्भाव, मानव सेवा एवं शान्ति का उपदेश दिया। इन्होंने हिन्दू और मुस्लिम भाईचारे पर बल दिया। इस भाईचारे के कारण त्यौहारों, दैनिक रहन-सहन, सामाजिक रीति-रिवाजों और संस्कारों के मामले में दोनों सम्प्रदायों के बीच विचारों का आदान-प्रदान हुआ और वे एक दूसरे के नजदीक आये। हिन्दू और ईस्लाम धर्म के सम्मिलित प्रभाव से दरियापंथी सम्प्रदाय का जन्म हुआ। इसके संस्थापक संत कवि दरियादास थे जिनका जन्म डुमराँव के निकट स्थित धरखंडा गाँव में एक मुस्लिम दर्जी परिवार में हुआ था। 1780 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। दरियापंथी सम्प्रदाय जाति प्रथा और बाह्याडम्बर का विरोध करता है और नैतिक आचरण की शुद्धता बनाये रखने पर जोर देता है। धार्मिक सहिष्णुता, सद्भाव, आपसी भाईचारा और शांति की यह परम्परा बिहार के धार्मिक विरासत की अनूठी विशेषता है।

इसाई धर्मः मुगल बादशाह जहाँगीर के शासनकाल में बिहार में ईसाई धर्म का आगमन हुआ। पेशे से एक चिकित्सक और अंग्रेज के मित्र मुकर्रब खाँ को जहाँगीर ने 1618 ई. में बिहार का सूबेदार नियुक्त किया। उसके समय में अनेक अंग्रेज व्यापारी पटना आये थे। मुकर्रब खाँ ने जहाँगीर के आदेश से पटना में चर्च संगठन की स्थापना करवाई थी। 18वीं सदी के प्रारंभ में ईसाई धर्म प्रचारकों ने धर्म के प्रसार के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार का भी कार्य शुरु किया। पटना के दो पादरी फादर डोमिनीक और फादर फ्रांसीस ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के उद्धेश्य से 1707 ई. में नेपाल और तिब्बत की यात्राएँ की। 1713 ई. में पटना सिटी में ईसाइयों के पहले प्रार्थना घर (चर्च) की स्थापना हुई। आज भी यह इमारत और इसके आस-पास का इलाका पादरी की हवेली के नाम से जाना जाता है।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में बिहार में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए अधिक संगठित और सुनियोजित तरीके से प्रयास आरम्भ हुआ। यह प्रयास रोमन कैथोलिक पादरियों के नेतृत्व में शुरु हुआ। 1846 ई. में अंस्टेशियस हार्टमैन नामक पादरी को पटना में पदस्थापित किया गया। उसकी नेतृत्व क्षमता विशेष थी। उसने पटना के साथ-साथ बेतिया, भागलपुर, मुंगेर एवं पूर्णिया में भी ईसाई धर्म का तीव्र प्रचार-प्रसार

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

किया। बाद में ईसाई पादरियों ने जनजातीय क्षेत्रों में भी विशेष रुप से कार्य किया। इनके अथक प्रयासों से जनजातीय लोगों का कुछ हद तक उत्थान भी हुआ और इन्होंने बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया।

ईसाई धर्म के अन्य सम्प्रदायों यथा प्रोटेस्टैन्ट, मेथोडिस्ट आदि ने भी बिहार में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये सम्प्रदाय बिहार के सुदूर ग्रामीण इलाकों में जा-जा कर लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करते थे। इन सम्प्रदायों से सम्बन्धित अनेक मिशन और चर्च संगठनों ने बिहार में मानव कल्याणकारी कार्यों को पूरा किया, विशेषकर सेवा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में। ईसाई मिशनरियों ने पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज भी बिहार में कई शिक्षण संस्थान, अस्पताल एवं जनसेवा केन्द्र 'रोमन कैथोलिक चर्च संगठन' के अनुदान एवं सहायता से चलाये जा रहे हैं।

सिक्ख धर्मः सूफी संत बाबा फरीद से प्रभावित गुरु नानक देव जी (1469-1530 ई.) ने सिक्ख धर्म की स्थापना की। गुरु नानक ने निराकार ईश्वर की कल्पना की जिसे उन्होंने अकाल पुरुष की संज्ञा दी। वे मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा तथा धार्मिक आडंबरों के कट्टर विरोधी थे परन्तु कर्म एवं पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। अपनी स्थापना के समय से ही सिक्ख धर्म का बिहार से घनिष्ट संबंध रहा है। गुरुनानक ने बिहार की यात्रा कर राजगीर, गया, मुंगेर, पटना, भागलपुर, कहलगाँव एवं राजमहल के क्षेत्रों में घूम-घूम कर इस धर्म का प्रचार किया और लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर बड़ी संख्या में अपने अनुयायी बनाये। पुनः सिक्खों के 9वें गुरु श्रीतेगबहादुर जी 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बिहार आए। वे सासाराम और गया होते हुए पटना पहुँचे थे। पटना में सिक्ख धर्म के अनुयायियों ने उनका स्वागत किया। अपने पटना प्रसाव के दौरान ही उन्हें औरंगजेब के राजपूत सेनापति की सहायता के लिए आसाम की ओर जाना पड़ा। उन्होंने आसाम यात्रा करने से पूर्व अपनी गर्भवती पत्नी गुजरी देवी को अपने भाई किरपाल सिंह के संरक्षण में पटना में ही छोड़ दिया। पटना में ही 26 दिसम्बर 1666 ई. को गुजरी देवी के गर्भ से सिक्खों के दसवें तथा अंतिम गुरु गुरुगोविन्द सिंह का जन्म हुआ। इसलिए पटना सिक्खों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान है।

अपने पिता की आज्ञा पर मात्र साढ़े चार वर्ष की आयु में गुरु गोबिन्द सिंह ने पटना छोड़ दिया और आनन्दपुर साहब (पंजाब) चले गये। वहाँ उन्होंने गुरु पद धारण किया और 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने हमेशा बिहार के साथ अपने मधुर सम्बन्ध बनाये रखा। अपने धार्मिक प्रतिनिधियों को गोविंद सिंह जी ने बिहार के कई क्षेत्रों में सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भेजा। इसी बीच 1708 ई. में गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद भी बिहार के सिक्खों ने उनकी पत्नी व माता साहिब को सहयोग करना जारी रखा। इन सिक्ख अनुयायियों ने 1730 ई. तक नियमित रुप से उनकी सेवा में धन और अन्य सहयोग सामग्रियों को भेजने की व्यवस्था की।

गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु के बाद उनके शिष्य बंदा बहादुर ने सिक्खों का नेतृत्व संभाला। वह सिक्खों का प्रथम राजनीतिक नेता हुआ, जिसने प्रथम सिक्ख राज्य की स्थापना की। 19वीं शताब्दी में भी सिक्खों की धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधियाँ बिहार में जारी रही। जगह-जगह सिक्ख संगत की स्थापना की गई। बुकानन (ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का कर्मचारी) के अनुसार 1812 ई. में बिहार में लगभग 50 हजार सिक्ख मतावलम्बी रहते थे। इन मतावलम्बियों में सिक्खों के उदासी पंथ के समर्थकों की ज्यादा

BY NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

संख्या थी। इन लोगों ने भौतिक आडम्बरों से लोगों को दूर रहने की सलाह दी। 1857 के विद्रोह के समय बिहार के सिक्खों ने बिहारी क्रांतिकारियों को समर्थन दिया था। जिसके कारण पटना इस विद्रोह के एक प्रमुख केन्द्र के रुप में उभरा। पटना के विद्रोह को दबाने के लिए आयी अंग्रेजी सेना में सम्मिलित सिक्ख सैनिकों का पटना के सिक्खों ने तिरस्कार किया। पटना स्थित हरिमंदिर साहिब में कई विद्रोहियों को शरण दी गयी थी। अंग्रेजी सेना ने हरिमंदिर साहिब की तलाशी लेने की पुरजोर कोशिश की किन्तु सिक्ख अनुयायियों ने ऐसा न होने दिया। फलतः यहाँ के महन्त को अंग्रेजी सेना ने गिरफ्तार कर लिया।

सिक्खों के गुरु और उनके विशिष्ट कार्य

क्र.सं.	गुरु	वर्ष	कार्य
1.	गुरुनानक देव	1469–1539 ई.	सिक्ख धर्म के संस्थापक तथा आदिग्रंथ के रचनाकार
2.	गुरु अंगद	1539–1552 ई.	गुरुमुखी लिपि के जनक
3.	गुरु अमरदास	1552–1574 ई.	धर्म प्रसार हेतु 22 गद्दियों की स्थापना की, सिक्खों के लिए अनुशासन आवश्यक बताया
4.	गुरु रामदास	1574–1581 ई.	अमृतसर नगर की स्थापना (1577 ई.) की
5.	गुरु अर्जुनदेव	1581–1606 ई.	श्री हरिमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) की स्थापना की, गुरु ग्रन्थ साहब का संकलन किया। इन्हें जहाँगीर ने फांसी दे दी
6.	गुरु हरगोविन्द	1606–1645 ई.	अकाल तख्त के संस्थापक, सिक्खों को सैनिक जाति में परिवर्तित किया।
7.	गुरु हरराय	1645–1661 ई.	मुगलों के उत्तराधिकार युद्ध में भाग लेने के उद्धेश्य से अपने पुत्र रामराय को मुगल दरबार में भेजा।
8.	गुरु हरकिशन	1661–1664 ई.	गुरुपद के लिए संघर्ष किया
9.	गुरु तेग बहादुर		1664–1675 ई. इस्लाम कुबूल न करने के कारण औरंगजेब द्वारा सिर कटावा दिया गया
10.	गुरु गोविन्द सिंह		1675–1708 ई. खालसापंथ के संस्थापक, सिक्खों के अंतिम गुरु

वैष्णव धर्मः मध्यकाल में बिहार का भागलपुर, गया तथा तिरहुत प्रदेश वैष्णव धर्म का महान् धार्मिक केन्द्र था। 'कृत्यरत्नाकर' से (जिसका संकलन चन्द्रेश्वर ने लक्ष्मीधर-रचित कृत्य 'कल्पतरु' से चौदहवीं सदी के आरंभ में किया था) यह स्पष्ट होता है कि मिथिला के लोग 13-14वीं सदी में विष्णु, हरि तथा शिव की उपासना करते थे। पौराणिक तथ्यों के उद्धरण से चन्द्रेश्वर ने इस बात की पुष्टि की है कि आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि जिसे क्रमशः 'शयन एकादशी' तथा 'उत्थान एकादशी' भी कहा जाता है, का पालन हिन्दु धर्मावलम्बियों द्वारा किया जाता था। इसी ग्रन्थ में जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के जन्म-दिवस के पालन की रीतियों का विशद विवरण दिया गया है। इस पुस्तक में कार्तिक माह की लक्ष्मी-पूजा (कोजागरी पूर्णमासी) का उल्लेख नहीं किया गया है, किन्तु विजयाद्वादशी को भगवान वासुदेव की पूजा, त्रयोदशी को शोभायात्रा, चतुर्दशी को उपवास तथा पूर्णमासी को हरि-पूजन तथा हरि-कीर्तन की चर्चा की गई है। मैथिल कोकिल विद्यापति के पिता के चाचा ने एक वैष्णव ग्रन्थ गोविन्द मानसोल्लास की रचना की। कामेश्वर-वंश के यज्ञधर ने 'गीत-गोविन्द' की एक टीका लिखी थी।

अचिंत्य भेदाभेदवाद दर्शन के प्रतिपादक, गोसाई संघ के संस्थापक तथा संकीर्तन प्रथा का प्रचलन शुरु करने वाले महान कृष्ण भक्त श्री चैतन्य सोलहवीं सदी के आरम्भ में अपने पितरों का पिण्डदान

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

करने के लिए गया आए। यहाँ इनकी मुलाकात ईश्वरपुरी से हुई जिनसे बाद में श्री चैतन्य ने दीक्षा ली। ईश्वरपुरी महान वैष्णव साधु थे। ईश्वरपुरी का गया में उपस्थित होना इस बात को प्रमाणित करता है कि गया उस युग में वैष्णव साधुओं का महान तीर्थस्थान था। मध्ययुग में बांका का मंदार क्षेत्र भी वैष्णव धर्म का एक केन्द्र था। यहाँ स्थित मधुसूदन के मन्दिर की ख्याति भारत के कोने-कोने में फैली हुई थी और दूर-दूर के प्रान्तों से असंख्य तीर्थयात्री यहाँ पूजा-अर्चना करने आते थे।

श्री चैतन्य के प्रमुख साथियों में चार जन बिहार के थे। वृन्दावन दास ने अपने 'चैतन्य-भागवत' में लिखा है कि ओड़िसा में श्री चैतन्य के अन्तरंग साथी परमानन्दपुरी का जन्म तिरहुत में हुआ था। रघुपति भी तिरहुत के एक सुयोग्य वैष्णव विद्वान थे जिनकी छह भक्तिमूलक कविताएँ रुपगोस्वामी द्वारा संकलित पद्मावली (च्ंकउंअंसप) में सम्मिलित है। हैमिल्टन बुकानन (1809 ई. तीर्थयात्री) ने तिरहुत तथा भागलपुर में वैष्णव सम्प्रदाय के 70 मठ होने की बात कही है जिसका विवरण पूर्णिया जिले के गजेटीयर में दिया गया है। बुकानन ने बिहार में लगभग 3000 वैष्णव परिवार होने की पुष्टि की है जो अधिक विद्वान तो नहीं थे परन्तु वे सब साधारण हिन्दी बोली में लिखी हुई वैष्णव कविताओं के अर्थ समझ लेते थे। वर्तमान समय में पटना के गायघाट में चैतन्यदेव की एक मूर्ति स्थापित है तथा बिहार के लगभग हर प्रांत में वैष्णव धर्म/सम्प्रदाय को मानने वालों की अच्छी संख्या है। ये सम्प्रदाय झूलन रथयात्रा तथा ढ़ोल (होली) आदि वैष्णव पर्व बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

बिहार में दर्शन (Philosophy):

भारतीय दर्शन के क्षेत्र में बिहार की भूमि ने इसे और अधिक विस्तार दिया। भारतीय ऋषि-मुनियों तथा विद्वानों ने अपने-अपने स्तर से इस संसार को समझने का प्रयास किया और इन प्रयासों को अपने-अपने तरीके से विश्लेषित भी किया। इस प्रकार चिन्तनधारा के छः पद्धतियों न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त का विकास हुआ। इन पद्धतियों को षड्दर्शन भी कहा जाता है। इनमें से दो दर्शन 'न्याय' और 'मीमांसा' का जन्म बिहार की पवित्र भूमि में स्थित मिथिला में हुआ था। बिहार की मिथिला भूमि दर्शन के साथ-साथ साहित्य और व्याकरण की भी जन्मदायी है। भागवत पुराण में लिखा है कि-''मिथिला के लोग आत्मज्ञान में पारदर्शी हैं। वे सभी सुख तथा दुःख से परे होकर दार्शनिक आदर्श का अनुसरण करते हैं।''

मिथिला में आज से हजारों वर्ष पूर्व दार्शनिक इतिहास के प्रशंसनीय तथा प्रख्यात द्रष्टा गौतम ने दर्शन की गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया। उन्हें न्यायशास्त्र का जन्मदाता माना जाता है। उन्होंने प्रथम शताब्दी के आस-पास न्याय दर्शन के मूल ग्रंथ 'न्याय सूत्र' की रचना की थी। स्कन्दपुराण में यह कहा गया है कि गौतम मिथिला के ही निवासी थे (देखेः- आसीद् ब्रह्मपुरनाम्ना विराजिता तस्या बसति धर्मात्मा गौतम नाम तापसः)। वात्स्यायन, उधोत्तकर,'तत्वचिंतामणि' के रचनाकार गंगेश उपाध्याय (13वीं सदी), उनके पुत्र वर्धमान उपाध्याय (1250 ई.), पक्षधर मिश्र (जयदेव, 1450 ई.), वासुदेव मिश्र (1450 ई.), शंकर मिश्र (1525 ई.), छोटे वाचस्पति मिश्र (15 वीं सदी के उत्तरार्द्ध) तथा दरभंगा राजवंश के प्रतिष्ठाता महेश ठाकुर गौतम के बाद महत्वपूर्ण दार्शनिक हुए। वात्स्यायन ने तीसरी सदी के आस-पास न्यायसूत्र पर एक टीका 'न्याय भाष्य' की रचना की। 7वीं सदी में उधोत्तकर ने इस ग्रंथ पर 'न्याय वार्तिक' नामक भाष्य ग्रंथ लिखा। ये सभी कृतियाँ प्राचीन न्याय साहित्य अथवा दर्शन की श्रेष्ठतम रचनाएँ है। नौंवी सदी में वाचस्पति मिश्र ने 'न्याय वार्तिक तात्पर्य टीका' की रचना की। उन्होंने वार्तिक की अवधारणओं की विस्तृत व्याख्या की तथा विजातीय और बौद्ध आलोचनाओं से उनका बचाव किया। वाचस्पति मिश्र के बाद उदयनाचार्य ने 'न्याय वार्तिक तात्पर्य परिशुद्धि' की रचना की। इसमें उन्होंने न्याय

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

दर्शन का समर्थन करते हुए बौद्ध तर्कशास्त्रियों के प्रहारों से इसकी रक्षा की। कालांतर में 13वीं शताब्दी में गंगेश उपाध्याय ने 'तत्वचिन्तामणि' नामक ग्रन्थ लिखकर 'नव्य न्याय दर्शन' की नींव डाली।

मिथिला के निवासियों ने 8वीं शताब्दी में मीमांसा दर्शन पर भी प्रकाश डाला। इसी समय कुमारिल भट्ट का आविर्भाव हुआ। उन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार तो किया ही, कर्मकाण्डों की श्रेष्ठता को फिर से पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उन्होनें अपनी तीन सर्वोत्तम रचनाओं श्लोकवर्तिका, तंत्रवर्तिका और तुपतिका में जैमिनी सूत्र पर सर्वभाष्य में विवृत मीमांसा का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया। बिहार के मीमांसकों में सबसे प्रसिद्ध मंडन मिश्र ने विवेक, भावना विवेक, विभ्रम विवेक, मीमांसा सूत्र अनुक्रमणी आदि रचनाओं के माध्यम से मीमांसा साहित्य की सेवा की। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर आदि जगद्गुरू शंकराचार्य केरल से पैदल चलते हुए मंडन मिश्र के गाँव महिष्मति (वर्तमान सहरसा जिलान्तर्गत महिसी गाँव) पहुँचे थे। इसी गाँव में दोनो विद्वानों के मध्य ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। मिश्र के सहपाठी प्रभाकर ने कुमारिल भट्ट की परम्परा से अलग हटकर बृहद्टीका और लधु टीका लिखकर मीमांसा के 'गुरू सम्प्रदाय' की शुरूआत की। दीर्घकाल तक मिथिला दर्शन का केन्द्र बना रहा। आधुनिक काल में भी बिहार की गौरवशाली भूमि की दर्शन परम्परा को महामहोपाध्याय मीमांसक चित्रधर मिश्र, बच्चा झा आदि से जीवित रखा और इसे आगे बढ़ाया।

19वीं सदी का धर्म एवं समाज सुधार (बिहार के संदर्भ में)

19वीं शताब्दी में भारत में हुए अनेकों धार्मिक एवं समाज सुधार आन्दोलनों (यथा-ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी, बंग-भंग आंदोलन, प्रार्थना समाज, वेद समाज, बहावी आन्दोलन, अलीगढ़ आन्दोलन, अहमदिया आन्दोलन, देवबन्द आन्दोलन, रहनुमाई माजदायासन सभा आदि) का बिहार पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा। इस आन्दोलन के फलस्वरूप नवीन चेतना का विकास हुआ जिसमें बंगाल के शिक्षित व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 19वीं सदी में बिहार बंगाल का ही एक प्रान्त था। इसलिए बंगाल में हो रहे धार्मिक एवं सामाजिक परिवर्तन (पुनर्जागरण) का प्रभाव बिहार के क्षेत्रों पर पड़ना स्वाभाविक था। बिहार के हिन्दू एवं मुस्लिम समाज में नवजागरण लाने में उपरोक्त आन्दोलनों का महत्वपूर्ण योगदान था।

ब्रह्म समाजः भारतीय पुनर्जागरण के जनक, अतीत और भविष्य के मध्य सेतु, भारतीय राष्ट्रवाद का जनक और आधुनिक भारत के पिता तथा ब्रह्म समाज के संस्थापक (स्थापना वर्ष 20 अगस्त 1828, कलकत्ता) राजा राम मोहन राय का बिहार से भी गहरा सम्बन्ध था। उन्होंने पटना में ही उर्दू और फारसी की शिक्षा ग्रहण की थी। ईस्ट इंडिया कंपनी में उनकी पहली नौकरी की शुरूआत बिहार के रामगढ़ से ही हुई थी। भागलपुर के कुछ उत्साहित युवकों ने राजा राममोहन राय से प्रभावित होकर भागलपुर महिला समिति की स्थापना की। इस संस्था का प्रधान उद्देश्य बिहार तथा बंगाल की महिलाओं का उत्थान करना था। 1866 ई. में भागलपुर में ही *डॉ. कृष्णनंदन घोष* ने बिहार में 'ब्रह्म सभा' की पहली शाखा की स्थापना की तथा वहाँ के युवकों को समाज सुधार तथा शैक्षणिक सुधार के लिए तत्पर रहने को कहा। इसके बाद केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से पटना और गया में ब्रह्म समाज की शाखाएं खोली गई। ब्रह्म समाज ने बिहार के हिन्दू धर्मावलम्बियों को अंधविश्वास से मुक्त कराने और नैतिक आचरण तथा एकेश्वरवादी विश्वास पर बल देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुरू प्रसाद सेन, हरिसुन्दर बोस निवारण चन्द्र मुखर्जी, प्रकाशचन्द्र राय तथा कामिनी देवी बिहार में ब्रह्म समाज के प्रतिष्ठित व प्रमुख नेता थे।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
The Book from BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

शिवचन्द्र बनर्जी, डी. एन. सेन, रजनीकांत गुहा, रंगबिहारी लाल के साथ अन्य कई स्थानीय नेताओं ने बिहार में ब्रह्म समाज को मजबूत आधार प्रदान किया।

आर्य समाजः सन् 1875 में आर्य समाज की बम्बई में स्थापना करने के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बिहार की यात्रा की थी। उनका सबसे पहले बिहार के बक्सर में आगमन हुआ जहाँ पर स्थानीय लोगों ने उनका स्वागत किया। कुछ क्षेत्रीय नेतृत्व के साथ वे डुमरॉव (आरा) होते हुए पटना पहुँचे। उनके अनुयायियों ने पटना कॉलेज के प्रांगण में एक सभा का आयोजन किया था जिसे दयानन्द सरस्वती ने सम्बोधित किया। पटना के बाद उन्होंने मुंगेर और भागलपुर की यात्रा की। तत्पश्चात् छपरा होते हुए वे बम्बई चले गये। ये उनका बिहार तथा बिहारियों के प्रति स्नेह ही था कि भोलानाथ और माखनलाल के आग्रह पर उनका दूसरी बार बिहार में आगमन हुआ। इस बार वे दानापुर आये थे। यहीं पर (दानापुर में) 1885 ई. में आर्य समाज की पहली शाखा खोली गई। इसके बाद धीरे-धीरे आरा, पटना, सिवान, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर आदि स्थानों पर आर्य समाज की शाखायें स्थापित हुई। पंडित महादेव, डॉ. केशवदेव शास्त्री, अयोध्या प्रसाद, बालकृष्ण सहाय आदि बिहार में आर्य समाज के प्रमुख सक्रिय नेता थे। आर्य समाज ने बिहार में समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में बहुत काम किया। इसने समाज में फैले जाति प्रथा का घोर विरोध किया और महिलाओं के उद्धार पर विशेष बल दिया। 1880 ई. में आर्य-रीति-रिवाज के साथ रमा बाई (एक विदुषी ब्राह्मण कन्या) का विवाह एक शूद्र विपिन बिहारी के साथ पटना में करवाई गई। यह घटना उस समय की सबसे क्रांतिकारी पहल थी। लोगों के सोच को नवीन दिशा देने तथा उसकी मानसिक स्थिति के विकास के लिए बिहार के लगभग हर हिस्से में विद्यालय की स्थापना की गई। कई अनाथ घर भी खोले गए। आर्य समाजी विचारधारा ने बिहारी युवकों में राष्ट्रीय चेतना पल्लवित कर उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस समाज के अग्रणी अनुयायियों यथा भवानी दयाल सन्यासी, पंडित वेदव्रत, रामानन्द शाह आदि ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी दी और कठोर यातनायें झेली। आर्य समाज द्वारा बिहार में चलाये गए शुद्धि आन्दोलन, गोरक्षा समिति आदि के प्रसार के कारण कुछ समय के लिए सामुदायिक वैमनस्य भी उत्पन्न हुआ। यद्यपि कुछ समय बाद यह नियंत्रित हो गया।

रामकृष्ण मिशनः स्वामी विवेकानंद ने 1897 ई. में कलकत्ता में बेल्लूर नामक स्थान पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन का भी बिहार में काफी प्रभाव पड़ा था। विवेकानंद दक्षिणेश्वर के स्वामी कहे जाने वाले रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य थे। रामकृष्ण परमहंस ने 1868 ई. में बिहार की यात्रा की। वे सबसे पहले देवघर आये थे। बिहार के श्री राख्ता राम ने बचपन में ही रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य प्राप्त किया था और दक्षिणेश्वर के मंदिर में काम किया था। स्वामी विवेकानन्द ने तीन बार बिहार की यात्रा की थी। पहली बार उन्होंने 1886 ई. में गया की चार दिवसीय यात्रा की। दूसरी बार वे 1890 में भागलपुर और देवघर पधारे तथा तीसरी बार उन्होंने 1902 ई. में फिर से बोधगया की यात्रा की। उनकी इन तीन यात्राओं से बिहार में रामकृष्ण मिशन की पैठ और भी गहरी हुई। फलतः 1920 ई. में बिहार के जमशेदपुर (आधुनिक झारखंड) में रामकृष्ण मिशन की पहली शाखा खोली गई। 1921 ई. में जामताड़ा और 1922 ई. में पटना और देवघर में इसकी अन्य शाखायें खोली गई। डॉ राजेश्वर ओझा और जतीन्द्रनाथ मुखर्जी बिहार में रामकृष्ण मिशन के सबसे प्रमुख कार्यकर्त्ता थे। इस मिशन का अध्यात्म और आधुनिक शिक्षा के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

थियोसोफिकल सोसायटीः मैडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल ऑल्कट ने 1875 ई. में न्यूयार्क (USA) में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की तथा 1882 ई. में आद्यार (मद्रास, भारत) में इसका

BY NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय खोला गया। इस सोसाइटी ने पुनर्जन्म सिद्धान्त का प्रचार किया तथा हिन्दुत्व, जरथुस्त्र एवं बौद्ध मत जैसी प्राचीन धर्मों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया। भारत में अपने जन्म के समय से ही थियोसोफिकल सोसाइटी ने बिहार के नवयुवकों को खूब आकर्षित किया। कर्नल ऑल्काट ने 1883 ई. में भागलपुर की यात्रा की। पुनः 1894 ई. में ऐनी बेसन्ट के साथ वे पटना आये थे। इस समय पटना में आन्दोलन के स्वरूप का विकास हो रहा था। बिहार में आन्दोलन को गति देने के लिए बाँकीपुर में थियोसोफिकल सोसाइटी के मुख्यालय की स्थापना की गई। इसकी लोकप्रियता दिनो-दिन बढ़ती जा रही थी। 1904 ई. तक इसकी शाखायें क्षेत्रीय स्तर पर भागलपुर, आरा, दरभंगा, गया, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, देवघर, छपरा, पूर्णिया तथा सीतागढ़ी में स्थापित हो चुकी थी। रामाश्रय प्रसाद, मधुसूदन प्रसाद, सरफराज हुसैन खाँ, पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा तथा परमेश्वर दयाल बिहार में थियोसोफिकल आंदोलन के सक्रिय नेता थे। इनमें पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा ने 1919 ई. से 1923 ई. तक 'थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इंडिया' के महासचिव की भी जिम्मेदारी सम्भाली। इस सोसायटी ने बिहार में धार्मिक समन्वय, आध्यात्म और साम्प्रदायिक सद्भाव के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वहाबी आंदोलनः 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बिहार के मुसलमानों में भी इस्लामिक धर्म और इस्लामिक समाज में सुधार लाने का प्रयास शुरू हुआ। इस कार्य को आगे बढ़ाने में वहाबी आन्दोलन का महत्वपूर्ण योगदान था। इस समय पटना वहाबियों के मुख्य केन्द्र में रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। वहाबियों ने इस्लाम धर्म के मूल उपदेशों के अनुरूप आचरण पर बल दिया और धर्म में आये विकारों तथा मुसलमानों पर पड़ने वाले पाश्चात्य प्रभाव का तीव्र विरोध किया। इस उद्देश्य से वहाबियों ने पारम्परिक इस्लामी शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्यभर में अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की। ऐसी संस्थाओं में सबसे पहले पटना में 1890-91 ई. में मौलाना अब्दुर रहीम द्वारा मदरसा इसलाहुल मुसलेमीन की स्थापना की गई। बिहार में चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन (1920-22) के समय मौलाना मोहम्मद सज्जाद ने 1921 ई. में मुसलमानों की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्था इमारतें शरीया की स्थापना फुलवारीशरीफ (पटना) में की। इस संस्था द्वारा मुस्लिम समाज के धार्मिक और सामाजिक कार्यों को संचालित एवं सुनियोजित करने का प्रयास किया गया। यह संस्था वर्तमान समय में भी क्रियाशील है और अपनी सेवायें सम्पूर्ण बिहार समेत झारखण्ड बंगाल तथा उड़ीसा में दे रही है।

OBJECTIVE QUESTION AHEAD.........

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न

बिहार में धर्म एवं दर्शन

1. बिहार में सबसे अधिक किस धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं?
   (a) इस्लाम (b) सिक्ख
   (c) जैन (d) बौद्ध
   (e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक
2. महात्मा बुद्ध का जन्म कब हुआ?
   (a) 536 ई० (b) 536 ई० पू०
   (c) 563 ई० पू० (d) 563 ई०
   (e) उपर्युक्त
3. महात्मा बुद्ध ने जब गृह त्याग तब उनकी आयु थी–
   (a) 29 वर्ष से कम
   (b) 29 वर्ष
   (c) 29 वर्ष से थोड़ा अधिक
   (d) 28 व 29 वर्ष के बीच
   (e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक
4. बौद्ध साहित्य में 'सम्बोधि' किसके लिए प्रयोग हुआ है?
   (a) महात्मा बुद्ध के गृह त्याग के लिए
   (b) महात्मा बुद्ध के शादी के लिए
   (c) महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, इसके लिए
   (d) महात्मा बुद्ध द्वारा किए गए कठोर तप के लिए
   (e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक
5. प्रथम व द्वितीय बौद्ध संगीति के मध्य कितने वर्षों का अन्तर था?
   (a) 100 वर्ष (b) 95 वर्ष
   (c) 83 वर्ष (d) 104 वर्ष
   (e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

6. बौद्ध धर्म 'हीनयान' और 'महायान' में बँट गया?

(a) चतुर्थ बौद्ध संगीति के पहले

(b) चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद

(c) प्रथम बौद्ध संगीति के पहले

(d) प्रथम बौद्ध संगीति के बाद

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

7. महात्मा बुद्ध की मूर्तियों का समामेल है?

(a) गांधार शैली (b) मथुरा शैली

(c) पाल शैली (d) पहाड़ी शैली

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

8. बौद्ध ग्रंथों में वर्णित 'अष्टमहास्थान' में बिहार के कितने स्थल शामिल हैं?

(a) 1 (b) 2

(c) 3 (d) 4

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. बौद्ध धर्म अहिंसा को प्रोत्साहित करता है किन्तु ईश्वर और आत्मा को नहीं मानता है।

2. दीपवंश में बौद्ध दर्शन तथा महावंश में बौद्ध धार्मिक सिद्धांतों की चर्चा की गई है।

3. बुद्ध के पूर्व जन्म का वर्णन जातक में किया गया है।

4. उपसंपदा भिक्षुओं के बौद्ध संघ में प्रवेश की घटना को कहा गया है।

(a) 1, 2 व 3 (b) 3 व 4

(c) 1 व 4 (d) 2, 3 व 4

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

10. इन जैन तीर्थकरों में से किनका जन्म बिहार में हुआ था?

(a) वसुपूज्य (b) मल्लिकनाथ

(c) मुनिसुव्रतनाथ (d) महावीर

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNKA

11. महावीर का जन्म हुआ था–

(a) ज्ञातृक कुल में (b) शाक्य कुल में

(c) नेमी कुल में (d) कोशल वंश में

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

12. जैन धर्म में 'जिन' कहा गया है–

(a) भगवान के अंशावतार को

(b) सभी 24 तीर्थंकर को

(c) समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले को

(d) आत्मा को

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

13. महावीर की मृत्यु के समय उनकी आयु थी–

(a) 72 वर्ष

(b) 80 वर्ष

(c) 72 वर्ष से थोड़ा कम

(d) 80 वर्ष से थोड़ा ज्यादा

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

14. महावीर स्वामी का जन्म हुआ था?

(a) कुंडग्राम (b) लिच्छिवी

(c) वैशाली (d) पटना

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर दीजिए–

कथन (A) : महावीर ईश्वर के अस्तित्व को नकारते थे।

कारण (B) : भय और लोभ का त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता था।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर अपना उत्तर चुनिए–

(a)A और B दोनों सही हैं, तथा R, A का सही स्पष्टीकरण है।

(b)A और B दोनों सही हैं, तथा R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(c)A सही है परंतु R गलत है।

(d)A गलत है परंतु R सही है।

(e)उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

BY NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

16. जैन संघ में श्रावक व श्राविका–

(a) गृहस्थ जीवन नहीं बिता सकते हैं।

(b) अपने मन का कर सकते हैं।

(c) गृहस्थ जीवन बिता सकते हैं।

(d) अपने मन का नहीं कर सकते हैं।

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

17. प्रथम जैन संगीति कब आयोजित की गई?

(a) 300 ई० पू० के आसपास

(b) 400 ई० पू० के आसपास

(c) 500 ई० पू० के आसपास

(d) 600 ई० पू० के आसपास

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

18. जैन धर्म ग्रंथ की भाषा है–

(a) मागधी (b) अर्द्ध मागधी

(c) प्राकृत (d) सौरसेनी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

19. वह प्रथम शासक कौन था जिसने सल्लेखना पद्धति से अपने प्राण त्यागे थे?

(a) चण्डप्रद्योत (b) खारवेल

(c) उदयिन (d) चन्द्रगुप्त मौर्य

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

20. बिहार में सर्वप्रथम इस्लाम धर्म ने प्रवेश किया–

(a) 13वीं शताब्दी में (b) 12वीं शताब्दी में

(c) 14वीं शताब्दी में (d) 11वीं शताब्दी में

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

21. ''इस सूफी परंपरा के मानने वाले लोग हाथ में छड़ी रखना और अपने सिर के बाल थोड़े बड़े और खुले रखना पसंद करते हैं।'' उक्त कथन कौन से सूफी सिलसिला के विषय में सही है?

(a) फिरदौसी (b) नक्शबन्दी

(c) चिश्ती (d) कादरिया

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

22. बिहार में सर्वाधिक लोकप्रिय सूफी सिलसिला है–

(a) सत्तारी (b) फिरदौसी

(c) चिश्ती (d) सुहरावर्दी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

23. दरियापंथी संप्रदाय मिश्रण है–

(a) हिन्दु व इस्लाम धर्म का

(b) इस्लाम व सिक्खधर्म का

(c) हिन्दु व सिक्ख धर्म का

(d) इस्लाम का ही शुद्ध भाग है

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

24. सिक्ख धर्म के संस्थापक थे–

(a) गोविन्द सिंह (b) गुरु नानक देव

(c) अर्जुन देव (d) तेगबहादुर

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

25. निम्नलिखित कथन गुरु गोविंद सिंह के विषय में कहे गए हैं–

1. इनका जन्म 26 दिसम्बर 1666 ई० को पटना में हुआ।

2. इन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की।

3. ये सिक्खों के 10वें किन्तु अंतिम गुरु नहीं थे।

4. जब इनका जन्म हुआ, इनके पिता आसाम की यात्रा पर थे।

सही कथन है–

(a) 1, 2 व 4 (b) 2 व 4

(c) केवल 4 (d) 1, 2 व 3

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

26. निम्नलिखित में से किस सिक्ख गुरु को जहाँगीर के द्वारा फाँसी दी गई?

(a) गुरुनानक देव (b) गुरु हरकिशन

(c) गुरु अर्जुन देव (d) गुरु रामदास

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

27. बिहार में सर्वप्रथम चर्च की स्थापना कहां की गई?

(a) मुजफ्फरपुर (b) पटना (c) गया (d) रोहतास

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

28. निम्नलिखित में से किसे भारतीय पुनर्जागरण का पिता कहा जाता है?

(a) राजाराम मोहन राय (b) महात्मा गांधी

(c) सरदार पटेल (d) अशरफ खान

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

29 किस वर्ष कृष्णनंदन घोष के द्वारा भागलपुर में 'ब्रह्म सभा' की पहली शाखा खोली गयी?

(a) 1866 (b) 1966

(c) 1888 (d) 1988

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

30. बिहार में 'आर्य समाज' की शाखा सर्वप्रथम कहां खोली गई?

(a) भागलपुर (b) दानापुर

(c) नालंदा (d) पटना

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

31. 'इमारतें शरीया' मुसलमानों की एक महत्वपूर्ण संस्था थी। इस संस्था द्वारा मुस्लिम समाज के धार्मिक व सामाजिक कार्यो को सुनियोजित व संचालित करने का प्रयास किया जाता था। वाहाबी आंदोलन के समय इस संस्था को बिहार में कहां स्थापित किया गया था?

(a) मुजफ्फरपुर (b) फुलवारीशरीफ

(c) गया (d) रोहतास

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

32. निम्नलिखित में कौन बिहारी वर्ष 1919 से 1923 तक 'थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इंडिया' के महासचिव रहे?

(a) परमेश्वर दयाल (b) रामाश्रय प्रसाद

(c) सरफराज हुसैन (d) पूर्णेन्दु नारायण

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

33. जैन ग्रंथ 'परिशिष्ट पर्वन' की रचना किसने की?

(a) महावीर (b) भद्रबाहु

(c) स्थूलभद्र (d) हेमचन्द्र

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

उत्तर

1. (e)	2. (c)	3. (b)	4. (c)
5. (a)	6. (b)	7. (e)	8. (c)
9. (e)	10. (e)	11. (a)	12. (c)
13.(a)	14. (a)	15. (a)	16. (c)
17. (a)	18. (b)	19. (d)	20. (e)
21. (b)	22. (b)	23. (a)	24. (b)
25. (a)	26. (c)	27. (b)	28. (a)
29. (a)	30. (b)	31. (b)	32. (d)
33. (d)			

By NUTAN SHUKLA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

We are providing-
- **free** ONLINE Test Series For 66th BPSC Preliminary Examination-2020
- Regular Standard Study Material for BPSC/BPSSC/BSSC

You can join us:
What's app No.- 9355167891 Facebook:- BIHAR NAMAN
Telegram Link:- http:t.me/biharnaman
Email Id:- biharnaman@gmail.com

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
NEW DELHI- 110084 (Approved By: Govt. Of India)
Mob:- 8368040065 Email- biharnaman@gmail.com

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA